शहरी स्कूली बच्चों पर जनमाध्यमों की दृष्टि और प्रभाव

(वर्धा शहर के दूसरी कक्षा से पाँचवी कक्षा के बच्चों के संदर्भ में)

The Impact And Vision Of Mass Media On Urban School Children

(With Special Reference of second to fifth class students in Wardha)

जनसंचार विषय में एम.फिल. उपाधि के लिए प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

सत्र- 2014-15

शोधार्थी

प्रदीप कुमार गौतम

पंजी.क्र.-**2014/05/208/022**

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र

(मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

अध्याय संख्या **पृष्ठ**

अध्याय 1 विषय प्रवेश **7-19**

1.1 शोध समस्या का परिचय
1.2 शोध के उद्देश्य
1.3 शोध उपकल्पना
1.4 साहित्य पुनरावलोकन
1.5 शोध प्रविधि
1.6 शोध का महत्व

अध्याय 2. टेलीविजन जनमाध्यम ः ऐतिहासिक व सामाजिक संदर्भ **22-31**

2.1 टेलीविजन: ऐतिहासिक संदर्भ
2.2 दृश्य-श्रृव्य माध्यम के रूप में टेलीविजन की उपयोगिता
2.3 टेलीविजन प्रसारण और सूचना, शैक्षणिक कार्यक्रम
2.4 टेलीविजन प्रसारण और सामाजिक परिप्रेक्ष्य

अध्याय 3. दर्शकों की दृष्टि और बच्चों के लिए टेलिविजन प्रसारण **34-43**

3.1 टेलीविजन प्रसारण और दर्शक अभिरूचि
3.2 बच्चों पर आधारित प्रमुख कार्यक्रम
3.3 टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रति बच्चों की समझ

अध्याय 4. टेलीविजन और बच्चों का व्यावहारिक अंतरसंबंध **46-55**

4.1 आम जनजीवन में टेलीविजन का हस्तक्षेप
4.2 टेलीविजन और शिक्षण व्यवस्था
4.3 टेलीविजन से बच्चों के व्यवहारिक बदलाव का अध्ययन

अध्याय 5. चयनित प्रतिदर्श एवं तथ्य विश्लेषण **58-80**

5.1 तथ्यों के चयन का आधार

5.2 तथ्य विश्लेषण प्रविधि
5.3 तथ्य विश्लेषण

निष्कर्ष एवं आवश्यक सुझाव **83-98**

संदर्भ सूची

परिशिष्ट

अध्याय 1

विषय प्रवेश

1.1 शोध समस्या का परिचय

सूचना और संचार युग मेंसंचार माध्यमों की उपयोगिता भी महत्वपूर्ण होती जा रही है। इस आधुनीकरण के दौर में हमारे पास विभिन्न तरह के संचार माध्यम उपलब्ध हैं जिनके प्रभाव से आज कोई अछूता नहीं रहा है। इन संचार माध्यमों का सबसे ज्यादा असर समाज में रहने वाले लोगों की जीवन शैली पर पड़ रहा है। संचार की प्रगति के क्रमबद्ध चरण और विकास यात्रा में इलेक्ट्रॉनिक जनमाध्यमों का बोलबाला सबसे अधिक रहा है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में भी रेडियो के बाद दृश्य-श्रृव्य की कल्पना को साकार करते हुए जब टेलीवीजन का आविष्कार हुआ तो यह संचार की सबसे अभूतपूर्व तकनीकी साबित हुई। दृश्य-श्रृव्य माध्यमों की अपनी अलग तकनीकी विशिष्टता है जिसके कारण यह विश्वभर में सबसे अधिक पसंदीदा और संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक उपयोग किया जाने वाला जनमाध्यम है। "भारत में बीसवीं सदी के मध्य काल तक टेलीविजन प्रसारण की तकनीक को प्रसारित और स्थापित करने की योजना पर कार्य किया जाना आरंभ किया गया था। इस संबंध में प्रमुख घटना सन् 1955 में दिल्ली में आयोजित एक औद्योगिक मेले में टेलीविजन का सार्वजनिक प्रसारण और उपकरणों का प्रर्दशन किया गया। वहीं दूसरे महत्वपूर्ण चरण में यूनेस्को की एक बैठक द्वारा भारत में प्रायोगिक तौर पर विशेष अनुदानयुक्त योजना के अंतर्गत टेलीविजन प्रसारण आरंभ किया गया। यह प्रसारण भी भारत में टेलीविजन की भविष्यगामी योजना का प्रथम और महत्वपूर्ण आधार था। क्योंकि, टेलीविजन तकनीक के आधार पर भारत जैसे देश के लिए सूचना, शिक्षा, सांस्कृतिक संरचना का विकास, राष्ट्रीय विकास व प्रेरणा का विस्तार, मनोरंजन के फलक खुलने संभव थे।"[1] वर्तमान में टेलीविजन ने अपने विस्तार में आधुनिकीकरण और विकास का आधार ही संचार माध्यमों को बना लिया है।

आज भारत में टेलीविजन का विस्तार एक उद्योग या बाजार के रूप में भी विस्तारित है। इस कारण टेलीविजन की प्रवृत्ति भी सिर्फ श्रोताओं के आधार पर केंद्रित न होकर बाजार केंद्रित हो गई है।

---

[1] डॉ. देवव्रत सिंह, भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली: 2007

टेलीविजन ने हाल ही में अपना स्वरूप बदला है। डिजिटल तकनीक ने जहां टेलीविजन को मजबूती प्रदान की है वहीं प्रसार की सुलभता भी बढ़ी है। ऐसे में अलग-अलग वर्ग के लिए विशेष कार्यक्रम और यहां तक कि चैनल और ऑनडिमांड कार्यक्रमों की लम्बी सूची दर्शकों के सामने है। महत्वपूर्ण बात यह है कि वयस्क जहां अपनी समझ और आवश्यकतानुसार कार्यक्रम का चयन कर उससे प्रभावित होते हैं। वहीं बच्चे अपने कार्यक्रमों की वृत्तियों को ग्रहण सहजता से करते है। दूसरी ओर बच्चे कार्यक्रमों की जटिलता को नहीं समझ पाते हैं और टेलीविजन की बाजारवादी संस्कृति और उसके दूरगामी परिणाम से कई बार नकारात्मक भी प्रभावित होते हैं। परिणामस्वरूप अलग अलग वर्ग और सामाजिक स्तर के बच्चों पर उनके परिवेश और पारिवारिक पृष्ठभूमि के अलावा भी प्रभाव पड़ता हैं। स्वाभाविक है कि इन समस्याओं को संचार माध्यमों के संदर्भ में अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। "चूंकि बच्चों से ही भविष्य के नागरिक और मानव संसाधन की इकाई का निर्माण संभव हो सकेगा। इसलिए ऐसी समस्याओं पर संचार शोध भी उचित प्रतीत होते हैं। प्रस्तुत शोध में बच्चों पर टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। बच्चों पर टेलीविजन के प्रति जो प्रथमदृश्टया प्रभाव होता है उनसे ही प्राथमिक सोच और व्यवहार का निर्माण होता है। इसलिए इन प्रभावों को विभिन्न दृष्टि से देखना, परखना और शोध की दृष्टि से पड़ताल करना इस शोध के अंतर्गत किया गया है"।[2]

इस विषय की समस्या को ध्यान में रखते हुए यदि देखें तो अधिकांशतः सभी को यह मानना होता है कि बच्चे टेलीविजन कार्यक्रम से प्रभावित हो रहे हैं उसका कारण भी ये है कि बच्चों का मन बड़ा ही कोमल होता है वह अपने आस-पास के माहौल तथा घर के लोगों के द्वारा की जाने वाली क्रिया-प्रतिक्रिया को देखकर उनका अनुशरण करने की कोशिश करते हैं और इसी प्रकार वह इन क्रियाओं को अपनी आदतों में ढ़ाल लेते हैं। जो इन बच्चों के भविष्य के जीवन में नकारात्मक व सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं यह उनके आसपास के माहौल या उन्हें दी गयी शिक्षा पर निर्भर होता है।यदि हम बात मीडिया की करें तो आज की आधुनिक जीवन शैली पर यदि सबसे ज्यादा असर किसी का है तो वो मीडिया का है। बचपन जीवन के इंजन की तरह होता हैं। उसे हम जिस राह पर ले जाते हैं जीवन की गाड़ी उसी ओर जाती है इसीलिए हर मां-बाप अपने बच्चों को अच्छी शिच्छा व परवरिश देने के लिए अपनी ओर से हर संभव प्रयास करते हैं। हर अभिभावक चाहता हैं कि उनका बच्चा आज्ञाकारी हो, बड़ों का सम्मान करे, उसमें संयम और समझ हो, ऐसे ही उसमें वह सभी गुण देखना चाहते हैं! जो एक होनहार बालक में होते हैं। इसके साथ ही वह अपने बच्चों की हर जिद को भी पूरा करते हैं। आज शहरों की व्यस्त जिंदगी में अपना जीवन व्यतीत

[2] डॉ. सारिका, किशोरावस्था पर मीडिया का प्रभाव, जानकी प्रकाशन, पटना: 2007

करने वाले माता-पिता जो अपने बच्चों को मुश्किल से ही समय दे पाते हैं वह चाहते हैं कि उनका बच्चा घर की चार दीवारी में सुरक्षित रहे और खुश रहे। इसलिए वह उसकी हर जिद चाहें वह खिलोनों की मांग हो, नये कपड़े, बाजार का कोई खाद्य पदार्थ हो या टेलीविजन पर कार्टून कार्यक्रम को देखने की जिद आदि को पूरा करते हैं। बच्चों के कार्टून देखने की जिद को अभिभावक आसानी से मान लेते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यह बच्चे को चुप कराने का अच्छा विकल्प है इससे बच्चा चुप होकर उसमें व्यस्त रहेगा उन्हें परेशान नहीं करेगा और वह आराम से अपने दैनिक कार्य निपटा लेंगे। आज भारत के सभी राज्यों के सभी जिलों के गांव और शहर सभी जगह टेलीविजन ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है और आज स्थिती यह है कि टेलीविजन के साथ ही डायरेक्ट टू होम (डी.टी.एच.) और केबल के माध्यम से निजी चैनलों ने भी अपनी पहुंच लोगों तक आसानी से बना ली है। शहरों कि स्थिती यह है कि यहां के परिवार अमीर हो या गरीब टेलीविजन लगभग सभी के पास उपलब्ध होता है और यहां लोग अपने दैनिक कार्य खत्म करके अपना बचा हुआ समय टेलीविजन देखने में व्यतीत करते हैं।

आज विभिन्न प्रकार के चैनल बाजार में उपलब्ध हैं जिसमें परिवार के लोग अपनी-अपनी पसंद के चैनल देखते हैं। घर के पुरूष जहां न्यूज देखना, क्रिकेट देखना व फिल्में देखना पसंद करते हैं वहीं महिलायें धारावाहिक देखना ज्यादा पसंद करती हैं और छोटे बच्चों को कार्टून चैनल देखना ज्यादा पसंद होता हैं।आज शहरी परिवेश में पल रहे बच्चे कार्टून कार्यक्रम देखने की मांग ज्यादा करते हैं और इन कार्यक्रमों में दिखाये गये किरदारों की नकल करते हैं जैसे इनके जैसा अभिनय करना, बोलना, हंसना आदि। इसके अलावा बच्चे बाजार में उपलब्ध कार्टून प्रिंटेड कपड़े, खिलोने व स्टेशनरी इत्यादि की मांग करते हैं। "टेलीविजन चैनलों पर दिखाए जाने वाले कार्टून आधारित कार्यक्रम बच्चों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। हर घर में कम उम्र वाले बच्चों में कार्टून आधारित कार्यक्रमों के प्रति एक खास तरह का आकर्षण देखा जा सकता है। इन कार्टून कार्यक्रमों का बच्चों के दिलो-दिमाग पर बड़ा गहरा असर हो रहा है। इस बात को कई वैज्ञानिक अध्ययनों ने साबित भी कर दिया है। दरअसल, टेलीविजन के जरिए दिखाए जाने वाले ज्यादातर कार्टून कार्यक्रम शैतानी और तिलस्मी दुनिया के किस्सों पर आधारित होते है। इसलिए इन कार्यक्रमों को देखने वाले बच्चों के मन में भी शैतानी और तिलस्मी दुनिया को लेकर अंधविश्वास कायम होता जा रहा है"।[3] एक दौर वह था जब बच्चे अपने परिवार और आस-पड़ोस से संस्कार हासिल करते थे। पर आज संस्कार सींचने का काम टेलीविजन कर रहा है। यही वजह है कि बुद्धू बक्सा कहे जाने वाले टेलीविजन परप्रसारित होने वाले कार्यक्रम बच्चों पर गहरा असर छोड़ रहे हैं। कार्टून कार्यक्रम देखने के दौरान बच्चे वैसी बातों से

[3] http://www.himanshusekhar.in

परिचित हो रहे हैं जो उनकी मानसिक और शारीरिक स्थिति के हिसाब से वाजिब नहीं है। ज्यादातर कार्टून कार्यक्रम हिंसा पर आधारित होते हैं वहीं कई कार्टून कार्यक्रम ऐसे हैं जो अंधविश्वास का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। कहा जा सकता है कि कार्टून के जरिए बच्चे वैसे संस्कारों को ग्रहण कर रहे हैं जो उनकी मानसिकता में आमूल-चूल परिवर्तन ला रहा है। इस बदलाव पर सकारात्मक नहीं बल्कि नकारात्मक प्रभाव ज्यादा लगता है।

यदि हम बात मीडिया की करें तो आज की आधुनिक जीवन शैली पर यदि सबसे ज्यादा असर किसी का है तो वो मीडिया का ही है। दूसरे शब्दों में कहें तो मीडिया का असर समाज में रहने वाले लोगों की मांसिकता को प्रभावित कर रहा है। या यूं कहें कि लोग जीने का तरिका टेलीविजन से सीख रहे हैं। आप देख सकते हैं जैसे बोलचाल हो या खान-पान या फिर पहनावा हर कहीं पर मीडिया की एक ख़ास किस्म का प्रभाव पूरे देश पर देखा जा सकता है। अगर हम बात इलेक्ट्रानिक मीडिया की करें तो यह एक ऐसा माध्यम है जो आज के दौर में सभी वर्गों के लोगों को प्रभावित कर रहा है तथा यह बच्चों को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाला माध्यम है। आज इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रभाव मानव के जीवन पर इस कदर पड़ रहा है कि आज उसके जीवन के समस्त क्रिया-कलापों पर इलेक्ट्रानिक मीडिया की छाप देखने को मिलती है। इसके कुछ सकारात्मक प्रभाव हैं तो इसके नकारात्मक प्रभाव भी कहीं हद तक देखने को मिलते हैं। आज इससे भाषा कहीं हद तक प्रभावित दिख रही है हिंदी भाषी क्षेत्र में तो भाषा में बदलाव इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। न्यू मीडिया के जरिए हिंदी-अंग्रेजी यानी हिंग्लिश भाषा का जो नया स्वरूप सामने आया है उसकी स्वीकार्यता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अब फिल्में और टीवी पर आने वाले धारावाहिकों तक में इस भाषा का बेधड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है। और आमलोग इसी भाषा को हिंदी का वास्तविक स्वरूप मानने लगे हैं। भाषा को कौन कहे पूरे देश में लोगों के फैशनपरस्ती और पहनावा तक में बदलाव और एकरूपता देखने को मिल रही है। कमोबेश खान-पान को लेकर भी ये बदलाव दिख रहे हैं। लोग पहले की तुलना में अपने स्वास्थ्य को लेकर कहीं ज्यादा सजग हुए हैं। जिसका अच्छा असर हम सबके सामने है। और इन बदलावों को हकीकत में ढ़ालने का काम कर रही है वो जानकारी जो उन्हें मीडिया के जरिए मिलती है।

1.2 शोध के उद्देश्य

बच्चों पर टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव पर आधारित इस शोध में संचार माध्ययम को विकासोन्मुख या मनोरंजनात्मक स्वरूप के साथ्साथ प्रभावी संचार की शैली और उसके

व्यावहारिक प्रभाव का आकलन करना है। इसके अतिरिक्त इस शोध के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं-

1. बच्चों के दैनिक क्रियाकलापों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. बच्चों के सामाजिक व्यवहार में बदलाव का अध्ययन।
3. बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
4. टेलीविजन देखने वाले और नहीं देखने वाले बच्चों के मानसिक स्थिति का अध्ययन।
5. बच्चों में संचार की समझ और महत्ता का आंकलन।
6. वर्तमान बाल आधारित कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करना।
7. बच्चों में व्यवहारिक परिवर्तन व अनुसरण में टेलीविजन की भूमिका को जांचना।

1.3 उपकल्पना - प्रस्तुत शोध निम्नलिखित उपकल्पनाओं पर आधारित है-

1. टेलीविजन कार्यक्रमों के द्वारा बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव हो रहा है।
2. टेलीविजन कार्यक्रमों से बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन आ रहे हैं।
3. बच्चों के माता-पिता बच्चों को टेलीविजन देखने देने में सहमत नहीं है।
4. कुछ कार्यक्रमों का बच्चों पर सकारात्क प्रभाव हो रहा है और कुछ कार्यक्रम का नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
5. भारत में बनने वाले कार्यक्रम और विदेशी कार्यक्रमों का बच्चों के मानसिक और संस्कारिक व्यवहार में परिवर्तन हो रहा है।

1.4 साहित्य पुनरावलोकन

किसी भी शोध की रूपरेखा बिना साहित्य पुनरावलोकन के संभव नहीं हौ शोध के प्रारम्भ होने के पूर्व, आरंभ होने वाला अध्ययन ही साहित्य पुनरावलोकन कहलाता है। हमारे इस शोध प्रबंध में सहित्य के पुनरावलोकन में हमने विभिन्न पुस्तकों, पूर्व में किये गये शोधों व वेब साइटों का अध्ययन किया है जो निम्नलिखित है-

1. शर्मा, ब्रजेश. 2008-09. प्राथमिक माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के मांसिक स्तर के निर्धारण में इलेक्ट्रोनिक मीडिया का प्रभाव. म. गां. अं. हिं. वि. वि., वर्धा. महा.

इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के निर्धारण पर गहरा प्रभाव डाला है उनके मस्तिस्क को इस इलेक्ट्रानिक मीडिया ने समय से पहले ही वयस्क बना दिया है बच्चे डांस कार्यक्रम व गायन के कार्यक्रम देखकर काफी उत्साहित व जागरूक हो रहे हैं विशेष रूप से कार्टून कार्यक्रम देखकर कार्टून बनाने तथा चित्रकला में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। सरकारी स्कूलों की अपेक्षा निजी स्कूलों के बच्चों पर इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रभाव अधिक देखने को मिला। इसके विभिन्न कारणों को इन्होंने इस शोध कार्य में रेखांकित किया है। यह परिणाम मेरे शोध कार्य में सहायक सिद्ध होगा।

2. डॉ. सारिका. 2007. किशोरावस्था पर मीडिया का प्रभाव समस्या एवं समाधान. जानकी प्रकाशन. अशोक राजपथ. चैहट्टा, पटना.

यह पुस्तक किशोरावस्था पर मीडिया का प्रभाव समस्या एवं समाधान' किशोरों पर मीडिया के द्वारा पड़ने वाले प्रभाव को देखने के लिए किया गया शोध कार्य है यह पुस्तक शोध आधारित पुस्तक है इस पुस्तक में प्राप्त निष्कर्ष यह है कि दूरदर्शन तथा फिल्म देखने वाले किशोर तथा किशोरियां पारिवारिक समस्याओं से अधिक पीड़ित रहते हैं तथा ऐसे किशोर तथा किशोरियों की शैक्षिक समस्या के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, सौन्दर्य, आर्थिक, ज्ञान, सुख, अधिकार, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य तथा स्वास्थ्य व यौन का प्रभाव निश्चित रूप से देखा गया। सौन्दर्य, प्रजातांत्रिक व धार्मिक मूल्य किशोरियों में श्रेष्ठ पाई गई। इन परिणामों के अच्छे तथा बुरे प्रभावों के मूल्यांकन से मेरे शोध कार्य में मदद मिल सकती है।

3. आलोक, टी.डी.एस. 2009. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया. अनामिका पब्लिकर्स. अंसारी रोड. दरियागंज, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या. 94

इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या 94 पर लेखक ने लिखा है कि आज के बच्चे जन्मदात्री माँ से संस्कार न पाकर दूरदर्शन के काग्रक्रमों से बेहुदा संस्कारों को अंगीकार कर रहे हैं इसका उदाहरण 1988 में चण्डीगढ़ से जनसत्ता में प्रकाशित बच्चों के द्वारा की गयी एक अकल्पनीय घटना से किया है जिसकी सीख उन बच्चों को उनसे पूछने पर मालूम हुआ कि उन्होंने यह टेलीविजन पर प्रसारित धारावाहिको से सीख लेकर इस घटना को अंजाम दिया। लेखक ने लिखा है कि बच्चे ऐसे हिंसात्मक और अश्लील प्रोग्राम देखकर ज्यादा आकार्षित होते हैं।

4 . क्लिंटन, रोधम हिलेरी. 2009. बच्चे हमारा भविष्य. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

यह पुस्तक 'हिलेरी राधम क्लिंटन' द्वारा लिखी गयी पुस्तक It Takes A Village की हिंदी अनुवादित पुसतक है। जिसका अनुवाद श्री वीरेन वर्मा ने किया है इस पुस्तक में लेखिका ने बच्चों के पालन पोषण संबंधित विभिन्न बातों को रखा है। इसमें बच्चों के लिए टेलीविजन, कम्प्यूटर व मोबाईल के द्वारा पड़ने वाले प्रभाव की समस्या को व्यक्त किया गया है। इसमें अनुवादक ने लिखा है कि भारत की जनसंख्या में बहुत बड़ी संख्या बच्चे और युवाओं की है यदि इनका लालनपालन ठीक प्रकार से हो और इन्हें संस्कारों की विरासत का महत्व और मूल्य मालूम पड़ जाए तो ये वेहतर भारत और बेहतर विश्व बनाने में अपना सकारात्मक योगदान दे सकते हैं।

5. पाण्डेय, कुमार. डॉ. योगेश. 2005. इलेक्ट्रानिक मीडिया और बाल विकास. सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली.

यह पुस्तक शोध पर आधारित है इसके निष्कर्ष में लेखक ने लिखा है कि सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में दूरदर्शन और कम्प्यूटर ने समाज के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला है। बाल मन भी इससे अछूता नहीं है बच्चों की पहुंच आज संचार के सभी माध्यमों तक है इन माध्यमों से प्रसारित कार्यक्रमों से प्रेरणा लेकर वे भविष्य के सपने बुनते हैं इसके निष्कर्ष में लिखा है कि लगभग 26 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार बच्चों की व्यवहार कुशलता में वृद्धि होती है लगभग 24 प्रतिशत बच्चों के अनुसार बच्चों में अपराधी प्रवृत्ति उपजती है 60 प्रतिशत के अनुसार बच्चे चिड़चिडे हो जाते हैं।

6. भानावत, डॉ. संजीव. 2002. भारत में संचार माध्यम. जनसंचार केन्द्र. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर. पृष्ठ संख्या 215 - 222, 252 - 255

दूरदर्शन की शुरूआत से ही शैक्षिक कार्यक्रमों को उच्च प्राथमिकता दी गयी है। साइट परियोजना 1982 से स्कूली बच्चों के लिए नियमित शैक्षिक कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये आज के समय में कार्यक्रमों को आयु के अनुसार वर्गीकरण करने की जरूरत को महसूस किया गया है 100 प्रतिशत बच्चों को टीवी देखना अच्छा लगता है और ज्यादातर बच्चे अभिभावकों द्वारा इसे बन्द करना पसंद

नहीं करते। ज्यादा टीवी देखने वाले बच्चों में यह देखा गया है कि वह बाहरी खेल-कूद व भाग-दौड़ नहीं करते और इसीलिए उनका वजन बढ़ना व दिल की बीमारियां ज्यादा होना स्वाभाविक है।

7. भारद्वाज, नंद. 2007. संस्कृति. जनसंचार और बाजार. सामयिक प्रकाशन. जटवाड़ा. नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या. 120

इस पुस्तक में'बच्चों और किशोरों के लिए जनसंचार' नामक अध्याय में लेखक ने बच्चों के कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण के बारे में लिखा है कि दूरदर्शन प्रसारणों में बच्चों और किशोरों के लिए प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों का अपना विशेष स्थान है। दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले कार्यक्रम किस आयु वर्ग के बच्चों को संबोधित हैं। सामान्यतः 3 वर्ष का बच्चा छोटी-छोटी बातों को समझ लेने में सक्षम होता है, जबकि 17 वर्ष का किशोर काफी हद तक परिपक्व अवस्था में पहुंच चुका होता है। इसलिए 3 से 17 वर्ष वाले बच्चों के मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्तर में काफी भिन्नता पाई जाती है। मोटे तौर पर उन्हें चार श्रेणियों में बांटकर इनके अनुरूप कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह अध्याय मेरे शोध कार्य में बहुत ही सहायक सिद्ध होगा।

8. कमलेश्वर. 2006. मीडिया भाषा और संस्कृति. प्रवीण प्रकाशन. महरौली, नई दिल्ली.

इस पुस्तक में लेखक ने दूरदर्शन को 'किचन' की संज्ञा दी है। लेखक ने लिखा है कि दूरदर्शन इस देश का 'किचन' है, जिसमें देश का मानसिक भोजन तैयार किया जाता है। नीति यह तय कर देती है कि भोजन सामिष होगा या निरामिष, मीनू क्या होगा, उसके बाद तो बनाने वाले की काबिलियत है कि वह कितना सही, स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक भोजन बनाता है। वह मिर्च-मसाले वाला चटखारेदार भोजन भी बना सकता है और परंपरानुसार पथ्य भी तैयार कर सकता है। तय यही करना पड़ता है कि हमारे विषमता पीड़ित समाज और सदियों के सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक शोषण से ग्रस्त औसत भारतीय को कैसा और कौन-सा मानसिक भोजन चाहिए।

9. शशि शेखर जी ने अपने ब्लॉग " चाय दुकान" में बच्चों पर मीडिया के प्रभाव का वर्णन इस प्रकार किया है कि बच्चों में सीखने की ललक सबसे ज्यादा होती है। ऐसे में मीडिया के बढ़ते प्रभाव का असर उन पर न हो, ये कैसे हो सकता है? टेलीविजन में दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों को असर बच्चों पर सबसे ज्यादा होता है। मनोरंजर के लिए कार्टून देखने के अलावा बच्चों के लिए खासतौर

से तैयार काग्रक्रमों का असर उन पर कितना है। इस बात का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि देश के अलग-अलग हिस्सों में शक्तिमान नामक धारावाहिक के मुख्य किरदार की नकल कर कई बच्चों ने अपनी जान गंवा दी।इस उदाहरण के साथ लेखक ने बच्चों पर टेलीविजन के पड़ने वाले गंभीर परिणामों को बतलाया है। यह मेरे शोध विषय में सहायक सिद्ध होगा।

10. देशकाल नामक ई जरनल में जगदीश्वर चतुर्वेदी जी के लेख ''मीडिया की हिंसा हिंसक बनाती है।'' में टेलीविजन के द्वारा दिखलायी जा रही हिंसा को जहर बताया है, जिन परिवारों में हिंसा के खिलाफ माहौल है या जिन परिवारों में कभी मारपीट नहीं हुई उनमें सामाजिक परिवारों की जड़े गहरी हैं। किन्तु जिन परिवारों में बच्चों के साथ मारपीट और दुरव्यवहार होता है वहां बच्चे हिंसा के कार्यक्रम ज्यादा देखते हैं। इन्होंने अपने लेख में बच्चों की उम्र का वर्गीकरण करते हुए उन पर पड़ने वाले प्रभावों तथा कुछ शोध पत्रों के माध्यम से बच्चों पर मीडिया के प्रभावों का उल्लेख किया है जो मेरे शोध कार्य में सहायक शिद्ध होगा।

11. रांची एक्सप्रेस नामक ई-समाचार पत्र में प्रकाशित एक लेख ''मीडिया की हिंसा और अश्लीलता की ओर आकर्षित होते बच्चे'' में लिखा है कि बच्चों के एकाकीपन का सबसे प्रिय साथी बना टेलीविजन बच्चों के मानस को जो परोस रहा है वह चिंता का विषय है। इसके साथ ही टेलीविजन पर प्रसारित विभिन्न कार्यक्रमों में दिखलाये जा रहे हिंसात्मक, अश्लील व तिलस्मीय किरदारों का बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों तथा उन्हें सीमित करने के उपायों की चर्चा की है। जो मेरे शोध कार्य के लिए सहायक शिद्ध होगी।

12. मीडिया फॉर राईट्स नामक ई-जनरल में 'सचिन कुमार जैन' द्वारा प्रकाशित लेख ''मूल्यों और संवेदनाओं से परे नहीं हो मीडिया'' में मीडिया व मीडिया कर्मी की समाज के प्रति सकारात्मक प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारियों पर बात की गयी है। तथा बच्चों के कार्यक्रम बनाते समय उनके मूल्यों पर पडने वाले प्रभावों को ध्यान में रखने की चिंता को व्यक्त कियाहै तथा सरकार की इन सब के प्रति सजगता पर भी बात की गयी है। इस तरह बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों पर विभिन्न मुद्दों पर बात की गयी है। जो मेरे शोध में सहायक शिद्ध होगी।

1.5 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य शहरी स्कूली बच्चों पर जनमाध्यमों की दृष्टि और प्रभाव, पर आधारित है। चूंकि जनसंचार शोध मानव की जिज्ञासा और अन्य संबंधित संचार प्रवृत्तियों की समस्याओं पर आधारित होती हैं। इसलिए संचार शोध की बेहतर समझ व प्रस्तुतीकरण के लिए शोध प्रविधि के माध्यम से इस शोध को वैज्ञानिक और तर्कसंगत अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक शोध की तरह इस शोध में भी शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है-

सूचना और स्रोत निर्धारण के लिए निम्नलिखित स्रोतों का प्रयोग किया गया है -

(क) प्राथमिक स्रोत

(ख) द्वितीयक स्रोत

शोध प्रविधि के अंतर्गत निम्नलिखित प्रणालियों को चयनकर अध्ययन किया गया है जिनमें प्रमुखतः-

क- निदर्शन विधि

ख - अवलोकन विधि

ग- साक्षात्कार विधि

घ- सर्वेक्षण विधि

ड़- अनुसूची

च- सारणीयन

उपरोक्त स्रोत संदर्भ और शोध प्रविधियों के आधार पर विभिन्न तथ्य संकलित किए गए हैं तथा शोध के क्रमिक चरणों में व्यवस्थित कार्य की रूपरेखा को प्रयोग में लाया गया है।

इस शोध प्रबंध में समिलित प्रविधियों का प्रयोग किया गया है इसके साथ ही निदर्शन पद्धित का प्रयोग किया गया है जिसमें बच्चों से अनुसूची के आधार पर आंकड़ों का संकलन किया गया है तथा शिक्षकों और अभिभावकों से साक्षात्कार के माध्यम से आंकड़ें प्राप्त किये गये है । बच्चों का चयन उम्र और कक्षाओं के अंतराल में किया इसके साथ ही सर्वे पद्धिति का उपयोग भी कुछ बच्चों से आंकड़ों को संकलित किया गया है जिनमे-

1.प्रस्तुत शोध प्रबंध में हमने केवल वर्धा शहर के स्कूल जाने वाले बच्चों को शामिल किया है।
2.निदर्शन में 100 अनुसूचियों का अध्ययन किया गया है। जिसमें 25-25 अनुसूचियां दूसरी, तीसरी, चैथी, पांचवीं, कक्षाओं के अंतराल में शामिल की गयी हैं।
3.बच्चों के व्यवहार को जानने के लिए 5 (पांच) शिक्षकों से साक्षात्कार के माध्यम से डाटा संकलन किया गया।
4.बच्चों के द्वारा घर में किये जाने वाले व्यवहार को जानने के लिए 5 (पांच) अभिभावाकों से साक्षात्कार के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया।

1.6 शोध का महत्व

आज के छोटे परिवारों में घुसे एकाकीपन का सबसे प्रिय साथी बना टेलीविजन बच्चों के मानस को जो परोस रहा है, वह गहरी चिंता का विषय है। इसे अब और अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए गिरते मूल्यों और नैतिक पतन के इस माहौल में टीवी पर दिखाई जाने वाली नृशंस हत्याएं, चोरी-डकैती के नए-नए तरीके, इंसानी जिंदगी को कीड़े-मकौड़े तुल्य कुचलने वाले दृश्य आग में घी का काम कर रहे हैं। आज व्यावसायिक चैनलों का उद्देश्य महज पैसा कमाना ही रह गया है। देश से कुरीतियां व अंधविश्वास मिटाने के लिए कुछ समर्पित लोगों ने अपना पूरा जीवन अर्पित कर जो कुछ हासिल किया, उसे फिर से मिटाकर आज का इलेक्ट्रानिक मीडिया पुनः उन्हीं अंधविश्वासों और कुरीतियों को स्थापित करने में लग गया है। ऐसा इसीलिए हो रहा है क्योंकि व्यावसायिक चैनलों को देश व समाज के प्रति न कोई प्रतिबध्दता है और न कोई नैतिक जिम्मेदारी। उन्हें इस बात की कतई चिंता नहीं कि उनके सैक्स और हिंसा से युक्त इंसान के भीतर जानवर को जगाने वाले कार्यक्रमों के दूरगामी परिणाम क्या होंगे और उन बच्चों का, जो आज टीवी पर यह सब कुछ देख-सुन रहे हैं, उनका व्यक्तित्व कैसा होगा?आपने टेलीविजन और अख़बारों में बहुत सी ऐसी घटनाओं के बारे में पढ़ा और सुना होगा जिसमें उस घटना का मुख्य दोशी एक नाबालिक बच्चा होता है। इनमें कुछ हाल ही में हुई घटनाओं का उदाहरणार्थ हैं दिल्ली के निर्भया कांड को कौन नहीं जानता जिसका मुख्य आरोपी 17 साल का था। तो प्रश्न यह उठता है कि इन बच्चों को इन अपराधों की शिक्षा देता कौन है। यह प्रश्न एक गंभीर समस्या को की तरफ इसारा करता है। यह समस्या केवल किसी एक समाज या देश की नहीं बल्कि पूरे विश्व की समस्या है।

टेलीविजन बच्चों के कोमल नाजुक एवं अपरिपक्व मस्तिस्क पर अपना क्या प्रभाव छोड रहा है जो उनके व्यवहार में परिवर्तन ला रहा है। शहरो में खासकर यह देखा गया है कि बच्चों का पडोस के बच्चों के साथ खेलना धमाचौकड़ी करना अब उन्हें आकर्षित नहीं करता। उनके स्वभाव में परिवर्तन आ रहा है जैसे उनमें बढ़ता चिड़चिड़ापन, स्वभाव में आक्रामकता आदि। इसके साथ ही बच्चे कार्टून पात्रों की नकल भी करते हैं जैसे उनकी तरह बोलना चलना इत्यादि। इसके साथ ही टेलीविजन कार्यक्रमों से बच्चों की शिक्षा और व्यवहार में कितने सहायक हैं। मेरा यह शोध कार्य इन्हीं सब कारणों को जानने और उनके समाधान तलाशने का प्रयत्न करना है।

निष्कर्ष

स्कूली बच्चो पर जनमाध्यमों की दृष्टि और प्रभाव, शोध विषय पर प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि

वर्तमान दौर सूचना प्रौद्योगिकी का दौर है तथा दिन प्रतिदिन हमारे समक्ष सूचना सम्प्रेषण के नये-नये माध्यम उपलब्ध होते जा रहे हैं। इन्हीं में से एक है टेलीविजन, टेलीविजन पिछले कुछ दसकों से सूचना सम्प्रेषण के सबसे ससक्त माध्यम के रूप में उभरकर हमारे समक्ष प्रस्तुत हुआ है। यही कारण है कि आज लगभग हर घर में इसकी उपलब्धता है। प्रस्तुत शोध में भी निष्कर्ष रूप में पाया गया कि 94 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं निनके घर टेलीविजन है तथा 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर अखबार जनमाध्यम के रूप में उपलब्ध है तो वहीं 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास रेडियो एवं 20 प्रतिशत के पास इण्टरनेट जनमाध्यम की उपलब्धता है। इससे यह सिद्ध होता है कि लोगों में टेलीविजन की लोकप्रियता सबसे ज्यादा है तथा लोग उसे ज्यादा देखना व सुनना पसंद करते हैं। इसकी लोकप्रियता का प्रतिशत 98 प्रतिशत है।

संचार की भूमिका और बच्चों में उसकी उपयोगिता के आधार पर कह सकते हैं कि बच्चे गीली मिट्टी के समान होते हैं आप उन्हें जिस ढ़ांचे में ढ़ालोगे वह उसी तरह का रूप गृहण कर लेते हैं ठीक उसी प्रकार से टेलीविजन पर जो वह देखते हैं उसका प्रभाव उनके व्यवहार में देखने को मिलता है। प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात हुआ कि ज्यादातर बच्चे अपने भाई एवं बहनो के साथ ही ज्यादा टेलीविजन देखना पसंद करते हैं। ऐसे में अपने भाई बहिन के प्रति उनका व्यवहार कैसा रहेगा यह कार्यक्रम की गुणवत्ता पर ज्यादा निर्भर करता है क्योंकि बच्चे जो देखेंगे उसी के अनुरूप आचरण भी करने का प्रयास करते हैं।

इस बात से हम और आप सभी अच्छी तरह से परिचित हैं कि बच्चे ज्यादातर कार्टून कार्यक्रम देखना पसंद करते हैं। तथ्यों के माध्यम से इस बात की पुष्टि भी की जा सकती है तथ्य संकलन में प्रश्नों के माध्यम से बच्चों से टेलीविजन पर दिखलाये जाने वाले कार्टून कार्यक्रम को बच्चों से अनुसूची में दिए कार्टून कार्यक्रमों के बारे में विकल्पों के माध्यम द्वारा बच्चों से पूछा गया जिसमें पाया गया कि सभी बच्चे कार्टून कार्यक्रम देखना पसंद करते हैं जिसमें कुछ बच्चे किसी कार्यक्रम को ज्यादा पसंद करते हैं और कुछ बच्चे किसी अन्य

कार्यक्रम को जिसे सारणी और ग्राफ के माध्यम से दर्शाया गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि बच्चे कार्टून कार्यक्रम ज्यादा देखते हैं। बच्चे जो भी टेलीविजन पर देखते हैं या सुनते हैं उसी के अनुरूप अपने आपको ढ़ालने की कोशिश करते हैं। इस बात की पुष्टि तथ्य भी करते हैं। तथ्य संकलन में उन बच्चों का प्रतिशत सबसे ज्यादा निकला जो बच्चे कार्टून कार्यक्रम देखकर उनकी नकल करते हैं। अर्थात यहां पर यह प्रासंगिक हो जाता है कि कार्टून कार्यक्रम की गुणवत्ता कुछ इस प्रकार की है कि उनका ज्यादातर सकारात्मक प्रभाव बच्चों के ऊपर देखने को मिला। शोध में प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह भी ज्ञात होता है कि ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चों को कार्टून कार्यक्रम देखने की इजाजत देते हैं। और ऐसे अभिभावक का प्रतिशत कम है जिन्हें यह लगता है कि बच्चों को कार्टून कार्यक्रम नहीं देखना चाहिए। वहीं कुछ अभिभावक ऐसे भी हैं जो अपने बच्चों को बहुत ही कम समय के लिए कार्टून कार्यक्रम देखने देते हैं। तथ्यों के इन आधारों पर यह कह सकते हैं कि अभिभावकों को यह लगता है कि बच्चों के मनोरंजन व ज्ञान वर्धन के लिए कार्टून कार्यक्रम सबसे अच्छा माध्यम है परन्तु बच्चों को भी कार्टून कार्यक्रम देखने के लिए समय का निर्धारित होना जरूरी है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कह सकते हैं कि 1 से 2 घंटे कार्टून कार्यक्रम देखने वाले बच्चों की संख्या अधिक है वहीं अधिक समय तक कार्टून कार्यक्रम को देखने वाले बच्चों की संख्या कम पाई गयी, परन्तु बच्चों से यह ज्ञात हुआ कि छुट्टी के दिन व्ह दिन में कई घंटे कार्टून कार्यक्रम देखते हैं।

ऐसा नहीं है कि टेलीविजन पर जो कार्टून कार्यक्रम आते हैं वो केवल मनोरंजन के लिए ही देखे जाते हैं इस बात की पुष्टि निम्न तथ्यों से की जा सकती है तथ्यों के द्वारा उन बच्चों की संख्या ज्यादा पायी गयी जो कार्टून कार्यक्रमों अच्छी बातें सीखने के लिए देखते हैं।

सुझाव

एक प्रभावी शैक्षिक कार्यक्रम अच्छे संस्कार, रचनात्मक संदेशों के बारे में होता है और सबसे महत्वपूर्ण बात बच्चों के सामाजिक और भावानात्मक विकास में मदद करने के लिए उसमें स्थानीय तत्व शामिल होते हैं। बच्चों के कार्यक्रमों को विश्वास और व्यवहार का निर्माण करने वाले बहुमूल्य सबक सिखाने के लिए निर्माण किया जाना चाहिए जो उन्हें एक बहु-जातीय और बहु-धार्मिक समुदाय में रहने के लिए सक्षम बनाए। उन्होंने तर्क दिया कि बच्चों के मीडिया को एक व्यावसायिक वस्तु की बजाय एक शैक्षिक उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए। आज आवश्यकता है कि शिक्षकों द्वारा मीडिया का उपयोग एक शिक्षण उपकरण के रूप में करने के कौशल में महारत हांशिल करने की जो चिंतनशील और गंभीर सोच को बढ़ावा दे एवं जिज्ञासा को प्रोत्साहित करें। इस उद्देश्य के लिए सरकारी नियामकों और नीति निर्माताओं को अविनियमन की बजाय, प्रोत्साहर तथा प्रभावी उपकरण के रूप में कानून का उपयोग कर मीडिया सामग्री पर लगाम लगनी चाहिए ताकि शिक्षा और सूचना के कार्यक्रमों की मात्रा और गुणवत्ता बेहतर की जा सके।

तथ्यों के आधार पर सुझाव के निम्नांकित बिंदु रेखांकितहैं -

1. तथ्यों के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि बच्चे टेलीविजन पर ज्यादा समय देते हैं। अभिभावक बच्चों पर ज्यादा देर तक टेलीविजन देखने पर नियंत्रण रखें, साथ ही ऐसे कार्टून कार्यक्रम या अन्य कार्यक्रमों से बचायें जिनसे बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

2. कार्टून कार्यक्रमों से बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव की समस्या को ध्यान में रखते हुए, अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को पुस्तके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

3. तथ्य संकलन के समय अभिभावकों से यह भी ज्ञात हुआ कि बच्चे अपने खाली समय में पूरा दिन कार्टून कार्यक्रम देखने में बिताते हैं। ऐसे में अभिभावकों को अपने बच्चों को खेलकूद एवं अन्य शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रेरित करें। उन्हें अधिक रात तक और लगातार अधिक समय तक टेलीविजन नहीं देखने दें।

4. बच्चों पर कार्टून कार्यक्रमों के प्रभाव का होना भी स्वाभाविक है बच्चों में जिज्ञासाओं का होना स्वाभाविक है अतः अभिभावकों को बच्चों की इन्हीं जिज्ञासाओं को शांत करने के उन्हें इस तरह के कार्यों से प्रेरित करें जिससे उनका नैतिक व बौद्धिक विकास हो सके।